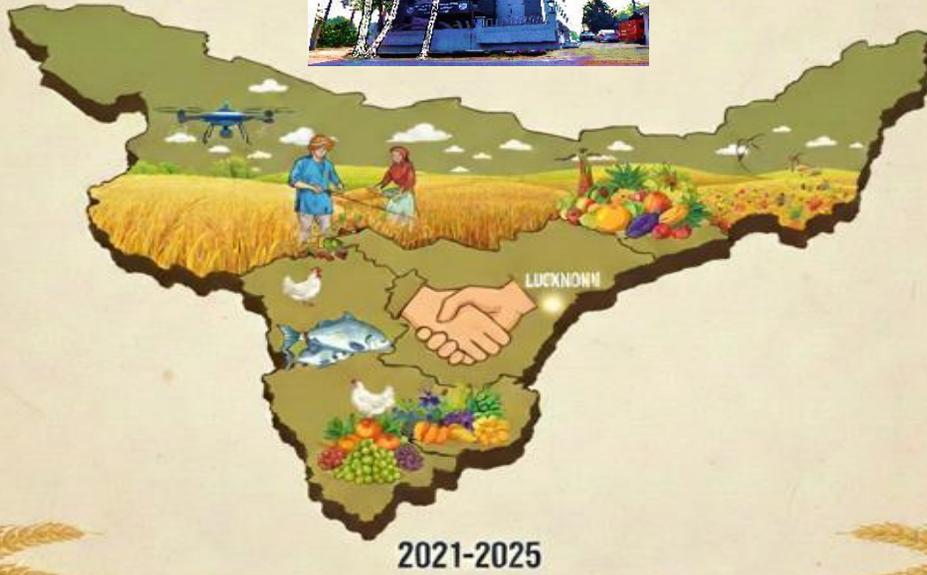


उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद,
लखनऊ



चार वर्षीय प्रगति रिपोर्ट और मुख्य उपलब्धियां

अधिदेश (मैनुडेट):

- ✓ उत्तर प्रदेश में सतत कृषि के लिये अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास की योजना बनाना, सुविधा देना, प्रोत्साहन एवं समन्वयन करना।
- ✓ उत्तर प्रदेश में कृषि अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार हेतु शासन के 'थिंक टैंक' के रूप में नीति निर्धारण, नियोजन, सहयोग, समन्वयन, परामर्श एवं सुविधा प्रदान करना।
- ✓ उत्तर प्रदेश में कृषि अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार संबंधी गतिविधियों हेतु प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों/संस्थानों तथा संबंधित विभागों के साथ संयोजन एवं सहयोग।

मुख्य उपलब्धियाँ

- उपकार द्वारा तैयार की गई टेक्निकल बुलेटिन "मेकिंग ऊसर ब्लूम" के आधार पर विश्व बैंक द्वारा उ.प्र. भूमि सुधार परियोजना का वित्त पोषण। योजना के अन्तर्गत फेज-1 में 21 तथा फेज-2 में 30 परियोजनाओं का उपकार द्वारा वित्त पोषण एवं समन्वयन।
- विश्व बैंक वित्त पोषित कृषि विविधीकरण परियोजना का कॉन्सेप्ट नोट उपकार द्वारा तैयार किया गया। इसके अन्तर्गत 44 परियोजनाओं का उपकार द्वारा वित्त पोषण एवं समन्वयन।
- उपकार द्वारा उत्तर प्रदेश कृषि नीति 2005 एवं 2013 तैयार की गई, जिसके आधार पर प्रदेश सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन करते हुए कृषकों की आय बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं।
- नोडल एजेन्सी के रूप में उपकार द्वारा कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों से संबंधित विभिन्न दायित्वों का निर्वहन तथा उनसे संबंधित विधिक वादों में अपेक्षित सहयोग।
- सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ की प्रबंध समिति में उपकार का प्रतिनिधत्व है।

1. फसल सुधार एवं किस्म विकास (Crop Improvement)

- **चावल:** पूर्वी उत्तर प्रदेश के 11 जनपदों से कालानमक के 174 जर्मप्लाज्म की कैंटलॉगिंग एवं संरक्षण तथा कालानमक-3 एवं कालानमक किरण प्रजातियों का विमोचन। 'सीधी बुवाई वाले चावल' (DSR) पर जलवायु अनुकूलन प्रोजेक्ट चल रहे हैं। मौसम के हिसाब से पैदावार के लिए सीधे बोए गए चावल की किस्मों और मैनेजमेंट के तरीकों में सुधार किया जा रहा है। छोटे दाने वाले सुगंधित चावल में 160 देशी किस्मों (landraces) का संरक्षण किया गया है, जिनमें से 2 किस्में जैविक खेती के लिए बेहतर पाई गई हैं, 2 किस्में जारी (released) और अधिसूचित (notified) की गई हैं।
- **काला नमक चावल:** जी.आई. टैग प्राप्त काला नमक चावल की 2 नई किस्में विमोचन (release) के लिए तैयार हैं, जिससे उत्पादन और सुगंध दोनों में वृद्धि होगी, जिससे किसानों को लाभ मिलेगा।
 - ✓ पूसा नरेन्द्र के.एन.-1 और पूसा सी.आर.डी.के.एन.-2 का प्रदर्शन अत्यधिक प्रभावशाली पाया गया।
 - ✓ चावल की सुगंध एवं गुणवत्ता मानकों के आधार पर, चयनित प्रविष्टियाँ ए.एस.जी.एस.टी.-34/पूसा-1638 और पूसा एस.एल.-03 को भारत के राजपत्र संख्या-4054, दिनांक 25 सितंबर 2023 को पूसा नरेन्द्र के.एन.-1 और पूसा सी.आर.डी. के.एन.-2 के रूप में अधिसूचित किया गया।

✓ राज्य प्रजाति विमोचन समिति से संस्तुति हेतु कालानमक की गुणवत्ता पैदावार, सुगन्ध आदि के आधार पर चार नवीन उत्कृष्ट लाइनों (2021-एनडीआर 8418-3, एनडीआर 8399-2, 2022-एनडीआर 8400-3, 2023-एनडीआर 2020-3-1) की पहचान की गयी है।

- **मोटा अनाज (Millets) पुनरुद्धार:** 'उत्तर प्रदेश मिलेट्स पुनरुद्धार कार्यक्रम' तहत, 10 नेटवर्किंग संस्थानों में परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। पहली बार उत्तर प्रदेश में मोटा अनाज की नई किस्में विकसित की जा रही हैं, जिससे आने वाले समय में किसानों को फायदा मिलेगा।
- **गेहूँ:** गेहूँ की उच्च उपज वाली नई किस्में विकसित की जा रही हैं। अंकुरण और वेजिटेटिव स्टेज पर भारी मिट्टी की नमी की स्थिति के लिए गेहूँ जर्मप्लाज्म की पहचान और मूल्यांकन किया जा रहा है, जिससे आने वाले समय में किसानों को फायदा मिलेगा। उत्तर प्रदेश हेतु गेहूँ की जैविक और अजैविक तनाव प्रतिरोध प्रजातियों उदाहरण के लिए तापमान सहिष्णु और सूखा प्रतिरोधी की पहचान की जा रही है। साथ ही साथ गेहूँ में अच्छी उपज देने वाली किस्में चिन्हित की गई हैं और उनके बीज किसानों को दिए जाते हैं।
- **मक्का:** 2024 में, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान CIMMYT के सहयोग से मक्का की कुछ ब्रीडिंग लाइन्स को विभिन्न संस्थानों और कृषि विज्ञान केन्द्रों (KVKs) में परीक्षण के लिए दिया गया था, जिनमें से 2 किस्मों (कल्लिंगराज, आरसीआरएमएच-2)के हाइब्रिड बीज उत्पादन का कार्यक्रम बाराबंकी और बहराइच में किया जा रहा है, जिसमें उच्च गुणवत्ता वाले बीज आने वाले समय में किसानों को उपलब्ध कराए जाएंगे। उत्तर प्रदेश में मक्का की देसी किस्मों में न्यूट्रीशनल क्षमता और जैविक और अजैविक तनाव प्रतिरोधक (बैंडेड लीफ और शीथ ब्लाइट के लिए रेजिस्टेंस में सुधार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में जलभराव के तनाव को सहने की क्षमता) प्रजातियों के लिए मक्का के जीनोटाइप की पहचान करने पर कार्य किया जा रहा है। फसल चक्र में मक्का, सरसों और मूंग की फसल से बेहतर परिणाम पाया गया है।
- **दलहन:** अरहर में, रंग, आकार और के आधार पर 74 देशी किस्मों (landraces) को संरक्षित किया गया है। इनमें पोषण मूल्य और उकठा रोग (पसज कपेमम) प्रतिरोधक क्षमता के साथ-साथ तनाव अंगमारी रोग प्रतिरोधी किस्मों का भी चयन किया गया है। इसके अतिरिक्त, फूल झड़ने (flower dropping) एवं भारी नमी की स्थिति में अंकुरण (germination) और वानस्पतिक अवस्था (vegetative state) में, विशेष रूप से जल भराव (water logging) की स्थिति में, उकठा रोग से प्रतिरोधकता पर शोध जारी है। अरहर में, उच्च उपज और बेहतर पोषण मूल्य वाली किस्में विकसित की जा रही हैं जो अरहर की खेती को एक नए आयाम तक ले जाएंगी। चना में फास्फोरस की कमी को दूर करने वाली उन्नत किस्में भी विकसित की जा रही हैं।
- **सरसों:** सरसों की नई प्रजातियों (देर से बोई जाने वाली किस्में में स्ट्रेस टॉलरेंट, येलो मोज़ेक और अन्य बीमारियों के प्रति प्रतिरोधी, उच्च पोषण वाली किस्मों को पारंपरिक प्रजनन पद्धति से विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है, साथ ही साथ विभिन्न शस्य विज्ञान पद्धतियों (एग्रोनॉमिक प्रैक्टिसेज़) के आधार पर सरसों की पैदावार को बढ़ाने पर शोध कार्य किया जा रहा है।
- **तिल:** खरीफ 2024 में भारी वर्षा के कारण, तिल की फसल नष्ट हो गई थी। इसको ध्यान में रखते हुए, अजैविक तनाव प्रतिरोधी किस्मों पर अनुसंधान किया जा रहा है, जिसमें 300 जीनोटाइप्स (चयनित जीनोटाइप जिनकी उत्तरजीविता दर 60% से अधिक है और भूमि प्रजातियों) के एक पैनल का मूल्यांकन 2, 4 और 6 दिनों वाले जलभराव तनाव के में किया गया। परीक्षण निचले (तनावग्रस्त) और ऊपरी (नियंत्रण) क्षेत्रों में किए गए।

- उपोष्णकटिबंधीय घास में बीज स्टैंडर्ड का डेवलपमेंट और प्योर जर्मिनेटिंग सीड (PGS) में सुधार।
 - कछार क्षेत्र में खेती हेतु उच्च उत्पादकता वाली कद्दूवर्गीय सब्जियों की किस्मों/संकरों का मूल्यांकन तथा इसकी कृषि तकनीकों का मानकीकरण।
 - आफ सीजन कल्टीवेशन आफ कुकरबिट्स इन ईस्टर्न उत्तर प्रदेश परियोजना के अन्तर्गत लौकी की नरेन्द्र माधुरी, नरेन्द्र शिवानी, काशीफल की नरेन्द्र उपकार तथा करेला की नरेन्द्र बारहमासी करेला-1 का विमोचन।
 - खीरे की कम लागत वाली संकर बीज उत्पादन तकनीक का मानकीकरण।
 - आम में अनियमित फलन तथा जेली सीड समस्या का प्रबन्धन।
 - आंवला एवं अमरुद के बागों में औषधीय एवं सगंध फसलों की खेती।
 - बागों में अधिक मूल्य वाली पुष्प एवं शाकभाजी फसलों की खेती।
 - हल्दी की जैविक बीज उत्पादन तकनीक का मानकीकरण।
 - किसानों को अधिक आय दिलाने के उद्देश्य से प्रमुख फसलों यथा गेहूं, धान, केला, अमरुद, टमाटर, आलू की वैल्यू चेन के मानकीकरण का कार्य प्रगति में।
 - जैविक खेती हेतु आलू की उपयुक्त किस्मों की पहचान। सी.आई.पी.सी. उपचारित आलू की व्यावहारिक भण्डारण तकनीक का मानकीकरण।
 - केले के परिपक्वता मानकों का निर्धारण तथा भण्डारण क्षमता में वृद्धि और साथ ही साथ, केले के रेशों से कपड़ा बनाने पर भी अनुसंधान चल रहा है।
 - पेठा उद्योग हेतु पेठा कद्दू की उन्नत किस्मों/संकरों की पहचान/विकास तथा पेठा बनाने की तकनीकी का मानकीकरण।
 - बुन्देलखण्ड में खरीफ में प्याज की खेती के लिये प्रजातियों की पहचान। किसान बड़े पैमाने पर प्याज उगा रहे हैं और प्रयासों से उनकी आय में वृद्धि हुई है।"
 - रेशम कीट पालन एवं बीजोत्पादन हेतु अण्डी की प्रजातियों का मूल्यांकन। रेशम कीट पालन हेतु शहतूत की अगेती तथा अधिक पर्णीय पैदावार देने वाले क्लोन्स का मूल्यांकन।
- **संकर प्रजातियों का बहु-स्थानीय परीक्षण कार्यक्रम:** फसलों की संकर प्रजातियों का बहु-स्थानीय उपयुक्तता परीक्षण। **संकर चावल:** वर्ष 2025-26 खरीफ में 09 निजी बीज कंपनियों के संकर चावल की 37 प्रजातियों एवं 03 चेक प्रजातियों का बहुस्थानीय परीक्षण कार्यक्रम प्रदेश के कृषि एवं विश्वविद्यालयों के 22 प्रक्षेत्रों तथा के.वी.के. पर क्रियान्वित कराया जा रहा है। **संकर मक्का:** वर्ष 2025-26 में 03 निजी बीज कंपनियों के संकर मक्का की 07 प्रजातियों एवं 01 चेक प्रजाति का बहु-स्थानीय परीक्षण कार्यक्रम क्रियान्वित कराया जा रहा है। **संकर बाजरा:** वर्ष 2025-26 खरीफ में 03 निजी बीज कंपनियों के संकर बाजरा की 07 प्रजातियों एवं 01 चेक प्रजाति का बहु-स्थानीय परीक्षण कार्यक्रम क्रियान्वित कराया जा रहा है।

2. तकनीकी नवाचार एवं मशीनीकरण (Technology & Innovation)

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI):** कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में AI के प्रयोग पर कार्य चल रहा है, जिसके उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। बदलते मौसम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्रॉप सिमुलेशन मॉडलिंग द्वारा उत्तर प्रदेश में अलग-अलग फसलों की पैदावार को उत्कृष्ट बनाने के लिये एक मॉडल तैयार किया जा रहा है।
- **ड्रोन तकनीक:** कृषि कार्यों में उत्पादकता बढ़ाने के लिए मानक संचालन प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा है साथ ही साथ उसके उपयोग को बड़े पैमाने पर बढ़ावा भी दिया जा रहा है।

- **नैनो-प्रौद्योगिकी:** ट्राइकोडर्मा हार्जियानम (टी.एच.1) और ट्राइकोडर्मा हार्जियानम (टी.एच.1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकणों के जैवसंश्लेषण के लिए प्रोटोकॉल का मानकीकरण किया गया और यूवी-दृश्यमान वर्णक्रमीय विश्लेषण और एसईएम पद्धति द्वारा सिल्वर नैनोकणों का अभिलक्षणन किया गया।
- **फल मक्खी नियंत्रण:** कृषि विश्वविद्यालयों में किए गए प्रयोगों से कुछ ऐसे फॉर्मूलेशन तैयार किए गए हैं, जिनसे छिड़काव से न केवल फसलों की अधिक उपज हुई है बल्कि जैविक तनाव जैसे फल मक्खी की कमी आई है। उदाहरण के लिए, करेले में सबसे अधिक स्वस्थ फल प्राप्त किया गया है।
- **इको-फ्रेंडली मॉड्यूल के लिए नेचुरल खेती** में कीड़ों, बीमारियों और खरपतवारों के मैनेजमेंट के लिए टिकाऊ और असरदार तरीके बनाए जा रहे हैं।
- **न्यूट्री-स्मार्ट विलेज वैल्यू-एडिशन** और स्ट्रेटेजिक दखल के जरिए प्रीस्कूल बच्चों एवं ग्रामीण परिवारों में कुपोषण रोकने के लिये उपकार के माध्यम से शोध किया जा रहा है।

3. प्राकृतिक संसाधन एवं जलवायु प्रबंधन (Climate & Resource Management)

- **बुंदेलखंड में भू-जल संचयन:** ICRISAT, हैदराबाद और उपकार के सहयोग से बुंदेलखंड क्षेत्र में भू-जल पुनर्भरण (त्मबीतहम) पर सफल कार्य किया गया है, जिससे अब किसानों को सिंचाई हेतु पर्याप्त जल मिल रहा है। बुंदेलखंड इलाके और पूर्वी उत्तर प्रदेश में फसल चक्र और नेचुरल खेती के सिस्टम के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उन्हें अपनाना, इस पर प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों किसानों की आय में बढ़ोतरी हुई है।
- **प्राकृतिक खेती:** विभिन्न शोध संस्थानों के साथ मिलकर प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूकता और नीति निर्माण हेतु रिपोर्ट तैयार की जा रही है, जिसे जल्द ही राज्य सरकार को सौंपा जाएगा।

4. पशुपालन एवं चारा विकास (Animal Science & Fodder)

- **देसी बकरी अनुसंधान:** सोनभद्र, जौनपुर और बुंदेलखंड की देसी बकरियों के मांस और दूध की गुणवत्ता सुधारने पर शोध जारी है। अध्ययन के बाद, बकरियों की नस्लों का पंजीकरण किया जा रहा है, ताकि भविष्य में नस्ल सुधार पर शोध किया जा सके।
- **मुर्गी पालन:** मुर्गियों में होने वाले रोगों के नियंत्रण पर शोध हो रहा है। हाइब्रिड नस्लों के विकास पर अनुसंधान किया जा रहा है। मुर्गी के मांस और अंडों की गुणवत्ता सुधारने के उद्देश्य से व्यावसायिक स्तर पर उच्च पोषण वाला मुर्गी दाना विकसित किया जा रहा है और मुर्गी पालकों को उपलब्ध कराया जा रहा है।
- **बकरियों में जठरांत्र संबंधी परजीवी और कृमिनाशक प्रतिरोध का नियंत्रण:** कृमिनाशक दवाओं के प्रतिरोध अध्ययन में Haemonchus और Trichostrongylus में Benzimidazole प्रतिरोध पाया गया, जबकि Levamisole, Ivermectin और Doramectin अभी भी प्रभावी रहे।
- **चारा विकास:** ज्यादा कटाई वाली चारा फसलों की प्रजातियों में पादप प्रजनन के द्वारा शोध किया जा रहा है। सहजन (**Moringa**): वृहद स्तर पर बीज संग्रह और चारे में इसके उपयोग से दुधारू पशुओं और पोल्ट्री की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाया जा रहा है। **जई:** में क्लाइमेट रेजिलिएंस और बेहतर न्यूट्रिशनल क्वालिटी के लिए ओट जीनोटाइप का इवैल्यूएशन और जेनेटिक सुधार के द्वारा उत्पादन को बढ़ाकर किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। **कांटेदार कैक्टस (Spineless)**

Cactus): चारा अनुसंधान संस्थान (IGFRI), झांसी के सहयोग से बिना कांटे वाले कैक्टस पर कार्य हो रहा है, जो चारा और टेक्सटाइल उद्योग दोनों के लिए उपयोगी है।

5. बागवानी एवं मूल्य संवर्धन (Horticulture & Value Addition)

- **आम (Mango):** रोगों के नियंत्रण और कम लागत वाली प्रबंधन तकनीकों पर कार्य हो रहा है। आम के भंडारण के लिए विशेष पॉलिथीन बैग विकसित किए गए हैं जो पकने की प्रक्रिया को धीमा करते हैं, जिससे किसानों को बेहतर बाजार मूल्य मिल सके।
- **ड्रैगन फ्रूट:** किसानों की जागरूकता बढ़ाने के लिए कम लागत वाली प्रजातियों एवं तकनीकी का विकास किया जा रहा है, और इस फल की खेती कर किसानों की आय में बढ़ोतरी हुई है।
- **शहद (Honey):** मधुमक्खियों के पलायन को रोकने एवं परागकण की दक्षता (efficiency) को बढ़ाने पर शोध किया जा रहा है। RLBCAU, झांसी में शहद गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला (Quality Test Lab) स्थापित की जा रही है, जिससे शहद का बाजार मूल्य बढ़ेगा।

6. शिक्षा, विस्तार एवं मानव संसाधन विकास

- **कृषि शिक्षा:** उपकार द्वारा नई फैकल्टी और असिस्टेंट प्रोफेसर्स के कौशल विकास (Career Advancement) के लिए समर और विंटर स्कूलों का आयोजन किया जा रहा है। किसानों की तकनीकी दक्षता बढ़ाने हेतु परिषद द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से प्रदेश में मण्डल स्तर पर सीजनल वर्कशॉप आयोजित कराई जा रही है। प्रदेश में स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों, केन्द्रीय संस्थानों के माध्यम से कृषकों को समसामयिक एवं नवाचार पूर्ण विषयों पर एक दिवसीय / दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित कराए जा रहे हैं।
- **युवा एवं महिला उद्यमिता:** खाद्य प्रसंस्करण और स्टार्टअप विकास के लिए युवाओं और महिलाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। वुमेन फ्रैंडली एवं छोटे प्रक्षेत्रों हेतु मैनुअली एवं पॉवर ऑपरेटेड विभिन्न यंत्र विकसित किये जा रहे हैं।
- **विश्वविद्यालय सहयोग:** बांदा और मेरठ विश्वविद्यालय के साथ मिलकर पाठ्यक्रम विकास और क्षमता निर्माण (Capacity Building) के कोर्स चलाए जा रहे हैं।

7. नीतिगत पहल एवं निगरानी (Policy & Monitoring)

- **बाजार लिंकेज:** एग्रोनॉमिक सर्वे के माध्यम से किसानों को सीधे बाजार से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।
- **एकीकृत कृषि प्रणाली:** किसानों की आय दोगुनी करने के लिए 23 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ फसलों के सघनीकरण, विविधीकरण एवं समन्वित कृषि प्रणाली पर आधारित कार्य हो रहा है।

8. परियोजना समीक्षा:

1. राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और विश्व बैंक की परियोजनाओं की सफल समीक्षा और समन्वय उपकार द्वारा किया गया है।
2. शोध निधि: शोध निधि के अन्तर्गत क्रियान्वित कराई जा रही 23 परियोजनाओंको समय-समय पर समीक्षा एवं स्थानीय अनुश्रवण कर परिणामों की गुणवत्ता सुनिश्चित की गई है।

3. रिवाल्विंग निधि: रिवाल्विंग निधि के अन्तर्गत क्रियान्वित कराई जा रही 38 परियोजनाओं की समीक्षा एवं स्थानीय अनुश्रवण कर परिणामों की गुणवत्ता सुनिश्चित की गई है।
- **क्रॉप वेदर वॉच:** राज्य स्तरीय मौसम आधारित कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदरवाच ग्रुप) गठित है। इस समूह की निरंतर साप्ताहिक बैठकें आयोजित कर प्रदेश के कृषकों को मौसम आधारित संस्तुतियां दी जा रही है जिससे प्रदेश के कृषक मौसम के कुप्रभाव से अपनी फसलों को बचाकर अधिक उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं।

✚ **सुझाव एवं अपेक्षाएं:** परिषद के कार्यों को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु राज्य सरकार से निम्नलिखित सहयोग अपेक्षित हैं :

1. **शासकीय संरक्षण:** उपकार (UPCAR) की गतिविधियों को निर्बाध रूप से जारी रखने और नीतिगत निर्णयों में तेजी लाने के लिए राज्य सरकार का निरंतर मार्गदर्शन एवं संरक्षण अति आवश्यक है।
2. **कोष का विमोचन:** चल रही महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाओं, विशेष रूप से जलवायु अनुकूलन और बीज विकास कार्यक्रमों के लिए आवश्यक वित्तीय अनुदान (Funds) की समयबद्ध विमुक्ति की जाए, ताकि शोध कार्यों में कोई बाधा न आए।
3. प्रदेश में स्थापित समस्त राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि महाविद्यालयों के शोध, शिक्षा एवं प्रसार के मूल्यांकन की अनुमति प्रदान की जाये तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा किये जा रहे विभिन्न अनुसंधान, प्रशिक्षण, प्रसार कार्यों के मूल्यांकन हेतु परिषद द्वारा मानक विकसित किये जायें।
4. कृषि एवं तत्संबंधित विषयों पर राज्य सरकार द्वारा विभिन्न श्रोतों से वित्त पोषित राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/ अन्य शोध संस्थानों में संचालित परियोजनाओं के मूल्यांकन का कार्य वित्तीय प्राविधानों सहित पुनः प्रारम्भ कराया जाय।
5. प्रदेश में कृषि अनुसंधान से संबंधित समस्त परियोजनाओं का क्रियान्वयन उपकार के माध्यम से सुनिश्चित कराया जाये।
6. कृषि विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों में संचालित शोध परियोजनाओं को समन्वित कर इनके परिणामों के परिप्रेक्ष्य में विचार-विमर्श एवं प्रचार-प्रसार हेतु परिषद द्वारा कार्यशालायें, ब्रेन स्टार्मिंग, गोष्ठियां आयोजित कराई जायें।
7. प्रदेश के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में स्थापित अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार की समितियों में नोडल एजेन्सी होने के कारण उपकार का प्रतिनिधि सम्मिलित किया जाय।
8. राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में संचालित अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं (एक्रिप) की निगरानी एवं मूल्यांकन भी उपकार द्वारा किया जाना चाहिये। इससे शोध परियोजनाओं की गुणवत्ता के साथ-साथ अच्छी किस्मों एवं प्रौद्योगिकी का विकास होगा, जो किसानों के लिये लाभकारी होगा। इन परियोजनाओं के प्रतिवेदन की प्रति भी उपकार को उपलब्ध करायी जाये।
9. कृषि विश्वविद्यालयों के स्तर पर संशोधित किये जाने वाले पाठ्यक्रम की संरचना तथा उसमें किसी भी प्रकार के संशोधन, में उपकार का प्रतिनिधि भी सम्मिलित किया जाये।
10. **लैब टू लैंड (Lab to Land) का सुदृढीकरण:** विकसित की गई नई तकनीकों (जैसे ड्रोन, AI और नई किस्में) को अनुसंधान केंद्रों से निकालकर सीधे किसानों के खेतों तक पहुँचाने की प्रक्रिया को और तेज किया जाएगा।

11. **जलवायु स्मार्ट विलेज:** भविष्य में प्रदेश के प्रत्येक एग्रो-क्लाइमेटिक ज़ोन में 'क्लाइमेट स्मार्ट विलेज' विकसित करने की योजना है, जहाँ एकीकृत कृषि प्रणाली और प्राकृतिक खेती का मॉडल प्रदर्शित किया जाएगा।
-

